पश्चिम भारतीय बारानी खेती परियोजना - बकरी स्वास्थ्य संवर्धन

इस पत्र के माध्यम से पश्चिम भारतीय बारानी खेती परियोजना के अन्तर्गत बकरी पालन व्यवसाय में विभिन्न बीमारियां, रोकथाम तथा उपचार तकनीक को दर्शाया गया है।

बकरियों की बीमारियां -

बकरियों में विभिन्न प्रकार की बीमारियां होती हैं। बीमारियां उत्पन्न होने का कारण कई प्रकार के जीवाणु, विषाणु तथा कीटाणु जो शरीर के अन्दर और बाहर विद्यमान होते हैं। जब बकरी की शारीरिक क्षमता कम हो जाती है तो यही कीटाणु शरीर में व्याधियां उत्पन्न करते हैं। किन्तु हम कतिपय मुख्य बीमारियों पर ही चर्चा करना चाहेंगे।

बीमारियों के प्रकार -

1. साधारण और ऋतु अनुसार। 2. परजीवी कीटाणुओं से। 3. छुआछूत वाली बीमारियां।

बीमार बकरी

1. साधारण बीमारियां -

(1) आफरा–पेट फूलना

कारण :

- अधिक खाने से, जुगाली प्रक्रिया बन्द होने से, कब्ज हो जाने से।
- मींगनी नहीं होने से।
- मात्रा से अधिक सूखा दाना खाने से।
- पीने के पानी की मात्रा कम मिलने से।
- बासी या सड़ा हुआ खाना खा लेने से।

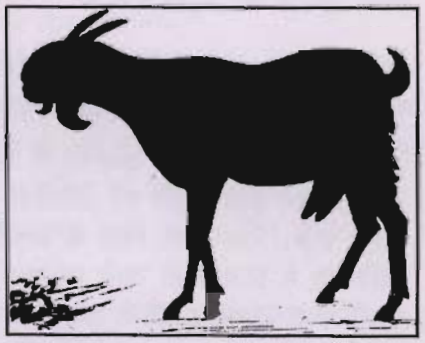

आफरा

लक्षण :

1. श्वास क्रिया का बढ़ जाना।
2. बेचैन होना।
3. बार–बार उठना–बैठना।
4. नथूनों का फूलना।
5. शरीर को लम्बा व टेढ़ा, मेढ़ा घुमाना।
6. बायीं ओर पेट का अत्यधिक फूलना तथा फूली हुई खोक पर हाथ मारने से ढ़ोलकी जैसी आवाज होना।

रोकथाम :

- पानी व संतुलित ताजा आहार खिलाने से।
- कारणों की उचित व्यवस्था करने से।

चिकित्सा :

1. श्वास क्रिया में सहायता के लिए बकरी के अगले पैरों को सतह से ऊपर रखें।
2. तेल (कैसा भी) 100 ग्राम, हींग 10 ग्राम। हींग को 200 ग्राम पानी में अच्छा घोल लें। इस घोल में तेल मिला लें। यदि उपलब्ध हो तो 20 ग्राम तारपीन का तेल भी मिला लें। इस मिश्रण को दो–तीन दिन तक प्रतिदिन दो बार पिलावें।
3. पाचन क्रिया पावडर 50 ग्राम गुड़ के साथ गोली बनाकर सुबह – शाम तीन–चार दिन खिलावें। पानी पीने को उपलब्ध रखें। पाचन क्रिया में सुधार आते ही बकरी स्वस्थ हो जायेगी।

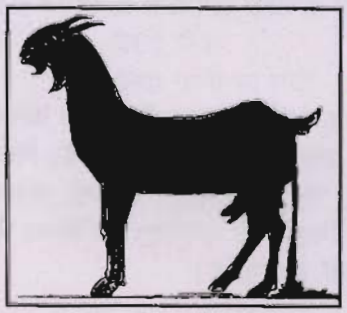

छेरा–बीमारी

(2) छेरा - पोंक - दस्तें

कारण :

– गंदी जगह पर रखने से, बाड़े की नियमित सफाई नहीं रखने से, बकरियों की स्वयं की सफाई नहीं रखने से, गन्दा, सड़ा खाना खिलाने या भूलवश 6–8 माह के बच्चों द्वारा खा लेने से बेक्टीरिया (जीवाणु)

ग्रामीण विकास ट्रस्ट द्वारा संचालित पश्चिम भारतीय बारानी खेती परियोजना, डिपार्टमेन्ट फॉर इन्टरनेशनल डवलपमेन्ट (डी. एफ.आई.डी.) यूनाइटेड किंगडम, (यू.के.) कृषक भारतीय को–ऑपरेटिव लिमिटेड (कृभको), भारत प्रशासन एवं राज्य शासनों के सहयोग द्वारा मध्यप्रदेश के झाबुआ, धार, रतलाम, राजस्थान के बांसवाड़ा, डूंगरपुर तथा गुजरात के दाहोद एवं पंचमहल जिलों में सफलतापूर्वक कार्य कर रही है। परियोजना का मुख्य उद्देश्य सहभागिता, निर्धनता एवं जेन्डर पर विशेष रूप से कार्यशील होकर निर्धन महिला एवं पुरुष कृषकों के जीवन स्तर एवं उनके सम्पूर्ण कृषि तंत्र में स्थायी रूप से सुधार लाना है।

पंजीकृत कार्यालय : ग्रामीण विकास ट्रस्ट, म.नं. 79, सेक्टर नं 15 ए, नोयड़ा–201301 गौतम बुद्ध नगर उ.प्र.
फोन : 011–84511654, 84513722, 84513720, E-mail : gvtdelhi@now-india.net.in
परियोजना कार्यालय : ग्रामीण विकास ट्रस्ट, 63 सरदारपुरा मीरा होटल लेन, उदयपुर–313004
फोन : 0294 - 523412, 529214 (Fax) 523403 E-mail : gvtudr@bppl.net.in Website : http//:www.gvtindia.org

पाचन संस्थान में बढ़ते हैं, और "इन्फेक्सियस" डायरिया होता है जिसे (Food Poisoning) आहार जहरीला छेरा कहते हैं।

लक्षण :

– खाना–पीना बन्द, चमड़ी शुष्क, वजन में गिरावट व कमजोर, काली, पतली / सफेद, पतली, बदबूदार दस्त (पोंक – छेरा), पशु का पेट पतला तथा आमाशय का लटक जाना।

रोकथाम :

– कारणों को समझ कर सुधार करना, साफ–सफाई रखना, स्वच्छ–संतुलित आहार एवं स्वच्छ पानी पीने को उपलब्ध कराना।

उपचार के पश्चात् बकरी

उपचार / चिकित्सा :

1. साधारणतया होने वाले कारणों पर ध्यान देने से छेरा बन्द होकर नियन्त्रित पाचन क्रिया प्रारम्भ हो जाती है।
2. किन्तु ठीक नहीं होने पर सल्फा की 5 ग्राम की गोली बकरी के शारीरिक क्षमता व भार के आधार पर एक गोली प्रातः व एक सायं गुड़ में मिश्रण कर 5 दिन तक खिलावें।
3. पाचक पावडर रोजाना खिलावें।
4. **फिर भी उचित लाभ नहीं होने की स्थिति में "एन्टेरोटोक्सीमिया वेक्सीन" के टीके लगवाना आवश्यक है।**

(3) खाँसी - जुकाम -

ऋतु परिवर्तन होने पर इस प्रकार की सामान्य बीमारी हो जाना सम्भव है। दो तीन दिन इन्तजार करने पर ठीक हो जाती है। फिर भी अधिक समय तक छींकें आए, नथूनों से पीला, चिकना, गहरा पदार्थ निकले या छींक पर बाहर निकले तो उपरोक्त चिकित्सा से लाभ होगा। वेक्सीन का टीका नहीं लगाना है।

(4) खुर सड़ने की बीमारी -

वर्षा ऋतु में बकरी के चारों पैरों की खुरियां पक जाया करती हैं।

कारण :

– वर्षा ऋतु में गीले व पानी भरे हुए स्थान पर बकरी को रखने से, गीले चारागाह में चराने से, वर्षा ऋतु में कीचड़ वाले स्थान पर चराने या बांध कर रखने से।

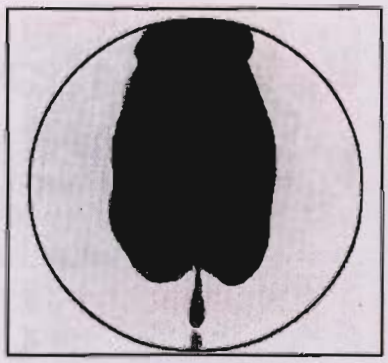

खुर सड़न

लक्षण :

– खुरियों में सूजन, दर्द होना, चलने में लंगड़ापन, खुरियों को दबाने पर लचीलापन व दर्द का अनुभव होना, अधिक तीव्रता की स्थिति में चलने में अधिक लंगड़ापन तथा असुविधा। खुरियों से बदबू, अधिक तीव्रता की स्थिति में या चिकित्सा नहीं कराने पर खुरियों के बीच व चमड़ी का सड़ जाना तथा कीड़ों का पनप जाना जिसके कारण खुरी पैर से पृथक भी हो सकती है।

रोकथाम :

– बकरियों को गीली जगह, अत्यधिक एकत्रित पानी व कीचड़ में नहीं रखें।

– वर्षा ऋतु में पैरों को धोकर साफ रखें। कांटा आदि लगा हो तो निकाल कर सरसों का तेल मल दें।

चिकित्सा :

खुरियों व पैरों को अच्छी तरह गुनगुने पानी से धो लें, सुखा कर निम्न औषधि की पट्टी बांधें –

फिनायल 1 भाग तेल (कैसा भी) 3 भाग
तारपीन का तेल 1 भाग (यदि उपलब्ध हो सके।

उपरोक्त को मिश्रण कर पट्टी को भीगोकर अच्छी तरह बांध लें। प्रतिदिन इसी पट्टी पर अतिरिक्त औषधि डाल कर पट्टी को गीली रखें। चार–पांच दिन में पट्टी बदल दें। लापरवाही या चिकित्सा में विलम्ब हो जाने पर सल्फाडीमीडीन 5 ग्राम की एक गोली प्रातः–सायं 5 दिन तक खिलावें। आवश्यकता होने पर "एन्टीबॉयोटिक" के इन्जेक्शन (सुई) 5 दिन तक लगवायें। किन्तु यह क्रिया मंहगी है, अतः समय पर ही उचित देखभाल करें।

(5) "एफथा" – मुंह फूलना–सड़ना –

वर्षा ऋतु में बकरियों के होठों व नथूनों के पास फुन्सियां हो जाती हैं।

कारण :

– वर्षा ऋतु में चरते समय कांटों से, मुंह–नाक के मुलायम भाग पर जख्म हो जाते हैं और विषाणु (Virus) का प्रकोप हो जाता है। यह छूतदार बीमारी होने से एक बकरी से पूरे रेवड़ में फैल जाती है। किसी भी उम्र की बकरी में यह बीमारी होती है। किन्तु छोटे बच्चों में अधिक होती है।

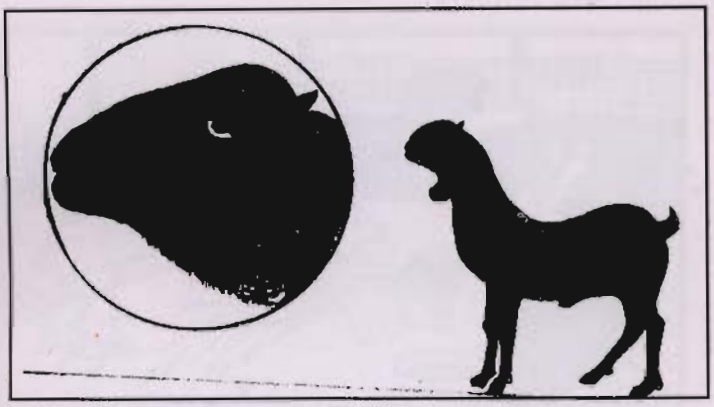

मुंह – सड़ना

लक्षण :

1. मुंह व नाक के पास भूरे रंग की शुष्क परत।
2. दर्द के कारण खाना–पीना बन्द।
3. होठों व नाक के पास सूजन।
4. बदबू/दुर्गन्ध आना।
5. बकरी का बेचैन रहना।

रोकथाम :

1. छोटे बच्चों व बकरी को वर्षा ऋतु में कंटीले क्षेत्र में नहीं चराएं।
2. बीमारी वाले पशु को अन्य स्वस्थ पशुओं से पृथक रखें।

चिकित्सा :

1. गुनगुने पानी से मुंह–नाक धोना।
2. किसी भी प्रकार का तेल लगाना।
3. मुलायम खाना व स्वच्छ पानी दें।
4. बांटा (आहार) को पानी में अच्छी तरह गलाकर खिलाना।
5. यदि व्यवस्था हो सके तो कोई मलम (मरहम) जैसे – टेरामाइसिन, लोरेक्सीन, सोफरामाइसिन का उपयोग करें।
6. ठीक होने तक चिकित्सा करें। 7–10 दिन में स्वतः बीमारी समाप्त हो जायेगी।
7. मृत्यु दर नगण्य – लापरवाही पर कीड़े पनप जाने से मृत्यु सम्भव।

(6) थन सूजन –

कभी–कभी बकरी में थन सूजन की बीमारी होती है।

कारण :

- बच्चों के अधिक समय तक थन से दूध पीने से।
- बाह्य पदार्थ से चोट लग जाने से।
- जंगल में चरते समय कांटा या नुकीली तार लग जाने से कभी–कभी नुकीली तार से थन फट जाता है और दूध बहने लगता है।

लक्षण :

- थनों का गरम प्रतीत होना।
- दुग्ध उत्पादन में कमी।
- कभी एक थन या दोनों थनों में बीमारी।
- छूने से या बच्चों के दूध पीने से दर्द महसूस होना।
- कभी–कभी अति तीव्रता वाली बीमारी की स्थिति में थन से दूध निकलना बन्द हो जाता है।

उपचार :

1. पूर्णतया सफाई रखें। 2. थनों में दूध नहीं रहने पर बच्चों को चूसने नहीं दें। 3. दूध दूहने के पश्चात् सरसों के तेल की हल्की मालिश करें। 4. गुनगुने व ठंडे पानी से छिड़काव करें। 5. सल्फा की एक गोली 5 ग्राम वाली प्रातः एवं सायं 4–5 दिन तक खिलावें। 6. नियमित सफाई व देखभाल से बीमारी का प्रकोप नहीं होता है।

2. परजीवी कीटाणुओं से होने वाली बीमारियां –

2.1 आन्तरिक परजीवी कीटाणु :

प्रकार :

बकरी के पेट, आंतों, फेफड़ों व कलेजे (Liver) में परजीवी कीटाणु पनपते हैं।

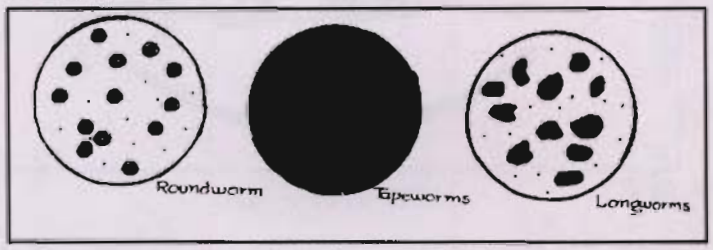

परजीवी कीटाणु के प्रकार

कारण :

1. बकरी के चरने की प्रक्रिया।
2. नदी, नालों, तालाबों के पास हरा चारा चरने से।
3. गन्दा पानी या गंदी जगह का पानी पीने से।

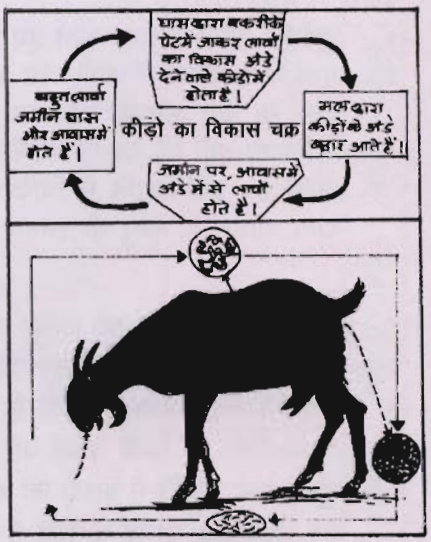

कीट–जीवन चक्र

परजीवी कीटाणु दो जगह जीवन यापन करते हैं।

प्रथम – बाह्य जीवन – पशु के शरीर के बाहर – जैसे जमीन पर, घास में, गोबर में, दलदल में, जहां बकरी चरती है। कीटाणु से बीमारी वाली बकरी

"छेरा" करती रहती है। इन स्थानों पर कीड़ों के अण्डों का तेजी से प्रजनन होता है। अण्डों से "लार्वा" बनता है जो पत्तियों पर चिपक जाते हैं। बकरी इन्हीं स्थानों पर चरती है। और लार्वा शरीर में प्रवेश कर जाते हैं।

द्वितीय – आन्तरिक जीवन – बकरी के इन स्थानों पर चरने से कीटाणु लार्वा शरीर में प्रवेश कर जाते हैं। पेट व आंतों में बकरी के भोजन पर पलते है। बकरी के जिस अंग का कीटाणु है वह उसी अंग में प्रवेश कर जाता है, पनपते हैं। और अण्डे देते रहते हैं। ये ही अण्डे बकरी के बीमार होने की स्थिति में छेरा द्वारा बाहर जमीन पर गिरते हैं। इस प्रकार कीड़ों का जीवन चक्र चलता रहता है।

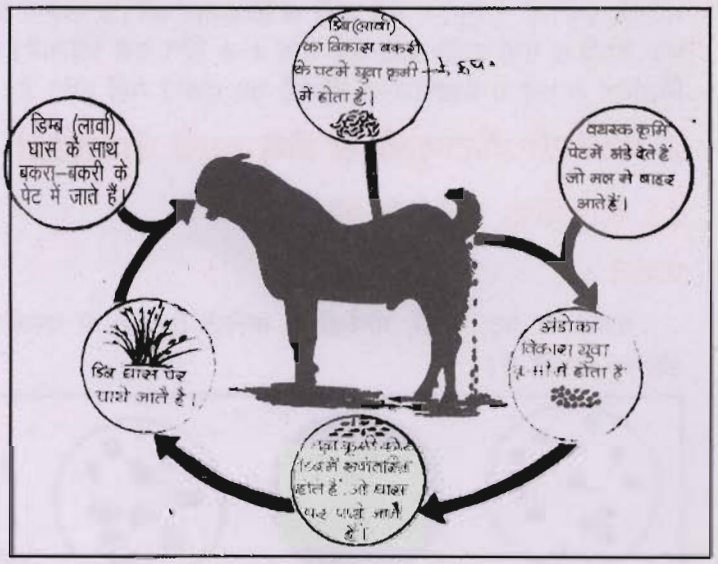

कीट–जीवन – चक्र

उचित सफाई

लक्षण :

शरीर में कीटाणुओं की संख्या बढ़ने पर निम्न शारीरिक लक्षण बकरी में दर्शित होते हैं –

1. पूर्णतया सार सम्भाल करते हुए भी बकरी का कमजोर होना।
2. भूख कम, वजन में कमी, पेट बढ़ना, दूध उत्पादन में कमी, दस्त या छेरा लगना। यदि समय पर बीमारी की रोकथाम/चिकित्सा नहीं की गई तो बकरी की स्थिति अत्यधिक क्षीण हो जाती है। इस स्थिति में चिकित्सा कराने पर भी लाभ मिल पाना कठिन है, मृत्यु भी सम्भव है।

रोकथाम :

1. बकरियों के आवास की साफ–सफाई।
2. कीटाणु उत्पादित स्थानों पर चराई रोक कर।
3. उत्तम व उचित रोकथाम यही है कि हर तीन माह के अन्तराल में बकरियों को कीड़े मारने की औषधियां पिलाते रहना नहीं भूलें। ऐसी स्थिति में बकरी की चराई किसी भी स्थान पर करें तब भी बचाव सम्भव व सही है।

– औषधियां – पावड़र, तरल पदार्थ व गोलियों में उपलब्ध होती है। विभिन्न प्रकार के कीड़ों से बीमारी का अमुक प्रकार की औषधी ही उपचारित करती है। अतः यह औषधि चिकित्सक की राय से ही क्रय करें व पिलाएं।

– औषधि पिलाने का कार्यक्रम वर्षा ऋतु से पूर्व करें फिर तीन माह का अन्तराल रखें। देखें कैलेण्डर चित्र – **कैलेण्डर**।

– सप्ताह में एक बार नीम की पत्तियां बकरी को दें।

– नीला थोथा व तम्बाकू के पानी का घोल वर्ष में एक या दो बार अवश्य पिलाएं।

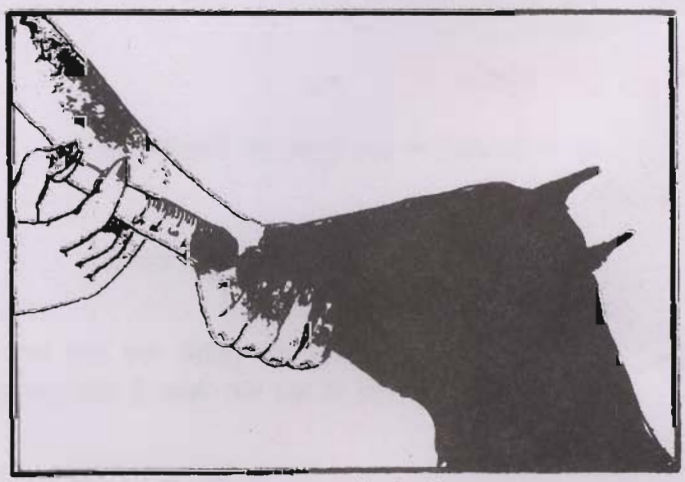

कीट नाशक औषधी पिलाना

बकरी का स्वास्थ्य कलैण्डर

	सितम्बर	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रेल	मई	जून	जुलाई	अगस्त
	मानसून के बाद		सर्दी					गर्मी			मानसून	

टीका कार्य

(अ) गलघोटू
(ब) मुंह–खुर पका
(स) जहरीला छेरा

मुंह पका – खुर पका

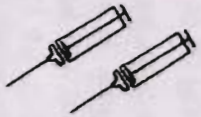

जहरीला छेरा

मुंह पका – खुर पका

जहरीला छेरा

गलघोटू

दवाई पिलाना

आंतरिक परजीवी कृमिनाश फीता, गोल व लीवर फल्यूक कृमिनाशक

सावधानी रखें

फीता, गोल कृमि, लीवर फल्यूक कृमिनाशक हेतु

फीता, गोल कृमि, लीवर फल्यूक कृमिनाशक हेतु

सावधानी रखें

आंतरिक परजीवी

फीता, गोल कृमि, लीवर फल्यूक कृमिनाशक हेतु

छिड़काव

सावधानी रखें

बाह्य कृमिनाशक मेलाथियोन – साईथियोन आदि आधा "प्रतिशत घोल शरीर पर तथा 1 प्रतिशत घोल आवास गृह में"।

खुर घिसना

सावधानी रखें

सम्भोग और ब्याँत

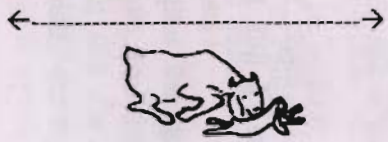

बधियाकरण

सावधानी रखें

आवास की सफाई

1. विधि :

- एक मिट्टी के मटके में 1 लीटर पानी लें।
- इसमें 200 ग्राम तम्बाकू की पत्तियां भिगो दें।
- अन्य मिट्टी के बर्तन में आधा लीटर पानी में 100 ग्राम नीला–थोथा घुलने को रखें। इन दोनों बर्तनों में इस सामग्री को रातभर रखें। दूसरे दिन प्रातः तम्बाकू वाला पानी किसी साफ प्लास्टिक बर्तन में छान लें, उसमें नीला थोथा का घोल मिला दें, अच्छी तरह हिलाकर बकरी को 20 मि.ली. पिलाएं।

आवश्यक – बकरी को 20 मि.ली. पिलाएं। (1) यदि औषधि बच गई है तो फैक दें। (2) पुरानी औषधि काम में नहीं लें। (3) इस औषधि का मिश्रण बकरियों को दवा पिलाने के दिन से 24 घंटे पूर्व ही घोलें।

2.2 बाह्य परजीवी कीटाणु –

बकरियों के शरीर पर भी कीड़े जिन्हें कथूरे, गिलूड़े (टिक्स – Ticks) के नाम से जानते हैं, चिपके होते हैं। ये बकरी के शरीर से खून चूसते हैं और शरीर में बीमारी भी पहुंचाते हैं।

रोकथाम –

- किसी भी कीटनाशक दवा से उसके अनुपात अनुसार बकरियों के शरीर पर छिड़काव करें।
- रेवड़ के रखने की जगह पर भी छिड़काव करें।
- छिड़काव प्रतिमाह या दो माह में करें।
- छिड़काव हेतु औषधी जैसे डी.डी.टी., बी.एच.सी., आसुन्टोल, नेग्यूवन 5 प्रतिशत, साइथियोन आदि घोल आधा प्रतिशत बकरी के शरीर पर व 1 प्रतिशत आवास गृह में छिड़कते रहें। बकरी का आवास सूखा रखें।

(3) छुआछूत वाली – बीमारियां –

बकरी में "गल–घोटू" तथा "मुंह–खुर पका" रोग अधिक होता है। इनका टीका प्रतिवर्ष वर्षा ऋतु से पूर्व तथा एक बार माह अक्टूबर में अवश्य लगवाना चाहिए। (कैलेण्डर का उपयोग करें)। सभी संबंधित छूतकार बीमारियों का कार्यक्रम इस कैलेण्डर में दर्शाया है। प्रति वर्ष निर्देशानुसार व्यवस्था करें।

3.1 बकरियों में अन्य कई बीमारियां भी होती हैं। व्यवसायिक तौर पर जिन का उल्लेख किया गया है, उचित है। फिर भी जानकारी हेतु सुची निम्न है

एन्थ्रेक्स – लंगडिणया बुखार, ब्रुसेलोसिस, जोहन्स् बीमारी, क्षय रोग (टी.बी) कोक्सीडियोसिस, थेलेरियेसिस आदि।

बकरीमें रोगोंकी रोकथामका कार्यक्रम

बीमारी के लक्षण प्रतीत होने पर उचित चिकित्सा उपलब्ध कराई जाती है।

प्रस्तुति : – **डॉ. के.बी. शर्मा**, पशुधन, विकास सलाहकार, **पी.एस. सोढी, डॉ. वी.एस. तोमर, श्री विनोद पाटिल** एवं अन्य ग्रा.वि. ट्रस्ट साथी तथा बायफ डवलपमेन्ट रिसर्च फाउन्डेशन

प्रदेश कार्यालय : पश्चिम भारतीय बारानी खेती परियोजना, ग्रामीण विकास ट्रस्ट, मधुकर टावर, रामकृष्ण कॉलोनी, सरदार पटेल मार्ग, झाबुआ–457661 (मध्यप्रदेश) **फोन** : 07392-44289, 43555 **फेक्स** : 44324
E-mail : jbagvt@bom6.vsnl.net.in

प्रदेश कार्यालय : पश्चिम भारतीय बारानी खेती परियोजना, ग्रामीण विकास ट्रस्ट, 143 तलदार भवन, सुभाष नगर, महाविद्यालय मार्ग, बाँसवाड़ा–327001 (राज.) **फोन** : 02962-46888, 47888 **फेक्स** : 46889 **Resi.** : 48999
E-mail : gvt_bsw@usa.net

प्रदेश कार्यालय : पश्चिम भारतीय बारानी खेती परियोजना, ग्रामीण विकास ट्रस्ट, कंचन कुंज, आनन्द भवन परिसर चाकलिया रोड़, दाहोद–389151 (गुजरात) **फोन** : 02673-30984, 21311 **फेक्स** : 30392 **Resi.** : 30155
E-mail : gvt.dahod@ad1.vsnl.net.in

SUNRISE PRINTERS, UDAIPUR Tel. : 0294-524780, 419418